दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

# हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 64 ❑ अंक-22 ❑ दिल्ली ❑ अगस्त ( द्वितीय ) ❑ मूल्य : 2 रु.

## दलित साहित्य कोर्स करें और दलित साहित्यकार बनें

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए और दलित लेखकों, दलित साहित्यकारों तथा दलित साहित्य में विश्व–व्यापक प्रसार करने के इच्छुक अभ्यार्थियों की इच्छापूर्ति के लिए दलित साहित्य के मैट्रिक, बी.ए. व एम.ए. हिन्दी के समकक्ष निम्नलिखित तीन कोर्स प्रारम्भ करने जा रहा है।

**1. दलित साहित्य रत्न कोर्स (हिन्दी के मैट्रिक के समकक्ष)**

- **प्रवेश के लिए योग्यता – मैट्रिक या 10वीं पास**
- **शिक्षण अवधि – 6 मास**
- **पंजीयन शुल्क – 500 रु.**
- **शिक्षण शुल्क – 2000 रु. (दो किश्तों में देय)**

**2. दलित साहित्य भूषण कोर्स (स्नातक के समकक्ष)**

- **प्रवेश के लिए योग्यता – इन्टर पास या दलित साहित्य रत्न कोर्स उत्तीर्ण**
- **शिक्षण अवधि – 6 मास**
- **पंजीयन शुल्क – 500 रु.**
- **शिक्षण शुल्क – 3000 रु. (तीन किश्तों में देय)**

**3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स (स्नातकोत्तर एम.ए. समकक्ष)**

- **प्रवेश के लिए योग्यता – बी.ए. पास या दलित साहित्य भूषण कोर्स उत्तीर्ण**
- **शिक्षण अवधि – 6 मास**
- **पंजीयन शुल्क – 500 रु.**
- **शिक्षण शुल्क – 4000 रु. (चार किश्तों में देय)**

**1. दलित साहित्य रत्न कोर्स**

यह हिन्दी की मैट्रिक सर्टिफिकेट कोर्स के समकक्ष होगा और इस कोर्स को पास करने के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी अभ्यार्थी को **'दलित साहित्य रत्न'** की उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

**2. दलित साहित्य भूषण कोर्स**

यह हिन्दी के बी.ए. कोर्स के समकक्ष होगा। इस कोर्स को पास करने के बाद अभ्यार्थी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी **'दलित साहित्य भूषण'** की उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

**3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स**

यह हिन्दी के एम.ए. कोर्स के समकक्ष होगा। इस कोर्स को पास करने के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी अभ्यार्थी को **'दलित साहित्य प्रभाकर'** उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

**कोर्स में प्रवेश के लिए पंजीयन शुल्क 500 रु. एवं शिक्षण शुल्क Online (9891989175 ) निम्न पते पर भेजकर प्रवेश लें और कोर्स पूरा करके दलित साहित्यकार बनें।**

**कार्यालय पता :**

**बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009 ( भारत )**

**मो. 9810278936 / 9891989175**

**ईमेल :**

**jay.sumanakshar@gmail.com**

# सुखी और सम्पन्न जीवन के लिए दलितो बिजनेस की ओर बढ़ो

**• डा. एम. एल. परिहार**

डा. अम्बेडकर दोहरी क्रांतियों के दार्शनिक थे। पहली क्रांति का दर्शन था जाति व्यवस्था का समूल विनाश, दूसरी क्रांति का दर्शन था भारत की आर्थिक तरक्की। डा. अम्बेडकर अर्थशास्त्री पहले थे, व्यवस्था परिवर्तक बाद में। डा. अम्बेडकर पहले भारतीय थे जिन्होंने किसी विदेशी विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में पीएचडी हासिल की थी। जिस औद्योगिकरण या उदारीकरण की शुरूआत 1991 में सरकार ने की थी उस तथ्य के दूरदृष्टा डा. अम्बेडकर ने 80 वर्ष पहले कह दिया था।

डा. अम्बेडकर वर्ष 1913 में अमेरिका के विश्वविख्यात विश्व–विद्यालय कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में पहुंच गए थे। उनका पहला शोध पत्र था प्राचीन भारत में व्यापार। लगभग सौ वर्ष पूर्व (1913) में ही डा. अम्बेडकर ने समस्त भारत–वासियों के लिए अमेरिकन नागरिकों की ही तरह का जीवन स्तर का स्वप्न देखना शुरू कर दिया। डा. अम्बेडकर की दूरदर्शिता ने भांप लिया था कि भारत में वह क्षमता है कि वह अमेरिका जैसा समृद्ध सम्पन्न तथा आत्मनिर्भर देश बन सकता है। लेकिन इसके लिए भारत को भी पूर्णतः औद्योगिक एवं शहरीकृत होने के लिए मानसिक

**( शेष भाग... पृष्ठ 4 पर )**

सम्पादकीय

# बाबा साहब डा. अम्बेडकर सौ वर्ष जीते, अगर उन्हें अपनों से धोखा और गांधी जी द्वारा छलावा नहीं मिलता

*** डा. सोहनपाल सुमनाक्षर**

बाबा साहब डा. अम्बेडकर की येवला अछूत महासभा में की गई यह घोषणा कि वह हिन्दू जरूर पैदा हुआ हूं क्योंकि यह मेरे बस की बात नहीं थी, पर हिन्दू रहते मरूंगा नहीं, यह मेरे बस की बात है। सन् 1935 में की गई उनकी इस घोषणा को (उन्होंने विजय दशमी के दिन) 10 अक्तूबर, 1952 को नागपुर की दीक्षा भूमि में बौद्ध धर्म ग्रहण करके पूरा किया।

महात्मा गांधी पहले से ही आशंकित थे कि डा. अम्बेडकर हिन्दू धर्म छोड़कर अन्य कोई धर्म अपने अनुयायियों के साथ अपना सकते हैं। इसलिए वह बाबा साहब डा. अम्बेडकर के दलितों के कल्याणकारी हर प्रत्येक कार्य में रुकावट डालते थे ताकि देश का अछूत हिन्दू धर्म में ही उनके नेतृत्व में रहे।

इसीलिए देश के संविधान निर्माण समिति में उनका प्रवेश रोकने के लिए देश के पूर्वी बंगाल के हिस्से को काटकर पाकिस्तान में दे दिया था जहां से चुनकर डा. अम्बेडकर को संविधान निर्माण समिति में आना था। उस समय कांग्रेस के सर्वोच्च नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल ने तो खुल्मखुल्ला चुनौती देकर कहा था कि देखें, अम्बेडकर संविधान सभा में कहां से चुनकर आते हैं, हमने उसके लिए सभी दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दी हैं।

पर शाबासी है एडवोकेट जोगेन्द्र दास मण्डल को जिन्होंने प. बंगाल से अपने वार्ड से बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर को सदस्य के रूप में चुनकर भारत संविधान निर्माण समिति में भेज दिया। भारत के अछूतों को इसके लिए एडवोकेट जोगेन्द्र दास मण्डल का सदैव ऋणी होना चाहिए जिन्होंने डा. अम्बेडकर को भारत संविधान निर्मात्री समिति में सदस्य चुनकर भेजा और इस तरह स्वतंत्रता, समता व सौहार्दपूर्ण भारत का संविधान बाबा साहब डा. अम्बेडकर बना सके।

उस समय बाबा साहब डा. अम्बेडकर अकेले तीन मोर्चों पर लड़ रहे थे। उसमें पहला था अछूतों के अधिकारों के लिए हिन्दू समाज के नेताओं से सीधा टकराव। दूसरा था तत्कालीन अंग्रेजी हुकूमत से अछूतों का समाज, शासन व प्रशासन में बराबर के अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष और तीसरा था देश के दलित अछूतों को आजादी के बाद बराबर के अधिकार दिलाना। इसके लिए बाबा साहब डा. अम्बेडकर को वर्ण–जातिवादी हिन्दू धर्म के नेताओं, मौजूदा अंग्रेजी सरकार और तीसरे सत्ता के भूखे कांग्रेसी हिन्दू नेताओं से सीधा जुझना पड़ रहा था।

अंग्रेज चाहते थे कि भारत के तीन भाग हो जायें। एक भाग

( शेष भाग... पृष्ठ 3 पर )


## भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

| | | |
|---|---|---|
| विश्व धरातल पर दलित साहित्य | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| अंधा समाज और बहरे लोग | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| सिन्धु घाटी बोल उठी | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| अब नहीं रहेंगे हाशिये पर | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| अम्बेडकर शतक | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| विश्व विभूति डा. अम्बेडकर | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी) | डॉ. सुमनाक्षर | 250/- |
| बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी) | डॉ. सुमनाक्षर | 150/- |
| दलित साहित्य | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| अम्बेडकर दर्शन | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| हमारे संत और समाज सुधारक | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| धर्म और समाज | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति) | डॉ. सुमनाक्षर | 300/- |
| दलित उद्घोष | डा. सुमनाक्षर | 100/- |
| दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| युगपुरुष बाबू जगजीवनराम | डॉ. सुमनाक्षर | 200/- |
| प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति) | डॉ. सुमनाक्षर | 100/- |
| मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष | डा. सुमनाक्षर | 300/- |
| सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य | आचार्य गुरुप्रसाद | 100/- |
| भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर | राजमल 'राज' | 100/- |
| मूल भारती से दलित | राजमल 'राज' | 100/- |
| अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन | राजमल 'राज' | 100/- |
| दलित साहित्य–दशा और दिशा | डा. माता प्रसाद | 200/- |
| दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन | डा. माता प्रसाद | 100/- |
| भारत की गुलामी के 22 सौ साल | प्रदीप कुमार मौर्य | 250/- |
| बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक | प्रदीप कुमार मौर्य | 120/- |
| गांधी, अम्बेडकर और दलित | प्रदीप कुमार मौर्य | 100/- |
| हम एक हैं | डा. माता प्रसाद | 100/- |
| रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास | डा. माता प्रसाद | 100/- |
| ताकि सनद रहे | डा. सुमनाक्षर | 200/- |
| Who's who Dalit Writers in India | Dr. Sumanakshar | 500/- |
| Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A. | Dr. Sumanakshar | 500/- |

**पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें**

**Bharatiya Dalit Sahitya Akademi**
**A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)**
**IFSC - CNRB0002592**
**Branch - Model Town, Delhi**

# सम्पादकीय पेज 1 का शेष....बाबा साहब डा. अम्बेडकर सौ वर्ष जीते, अगर उन्हें अपनों से धोखा और गांधी जी द्वारा छलावा नहीं मिलता

मुसलमानों को पाकिस्तान के रूप में दे दिया जाए। दूसरा भारत का भाग हिन्दुस्तान के रूप में हिन्दुओं को दे दिया जाए और तीसरा भारत देश का भाग यहां के अछूतों को 'अछूतीस्थान' के रूप में दे दिया जाए, ताकि ये तीनों अपने–अपने हिस्से के लिए लड़ते रहें और उन्हें भारत पर और अधिक समय हुकूमत करने के लिए मिल जाए।

इस पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने साफ कह दिया कि हम अछूत इस देश के आदिवासी–मूल निवासी हैं। हम कभी नहीं चाहेंगे कि भारत के तीन टुकड़े हों। आपने भारत पर डेढ़–दो साल राज कर लिया, आपने हमारे उद्धार के लिए कुछ नहीं किया, अब आप भारत से चले जाएं, देश में स्वतंत्रता, समता और पारस्परिक भाई–चारा को हम खुद हासिल कर लेंगे। अंग्रेजी सरकार बाबा साहब डा. अम्बेडकर की देशभक्ति के प्रति नतमस्तक थी, क्योंकि मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान के रूप में भारत के दो टुकड़े करने की अपनी जिद पूरी कर ली थी।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर की देशभक्ति देख कांग्रेस के सभी नेता उनके सामने नतमस्तक थे, 'अछूतीस्थान' की इस घटना ने गांधी जी के चक्षु खोल दिए थे जो डा. अम्बेडकर को 'अंग्रेजों का पिट्ठू' कहकर पुकारते थे, उनकी समझ में अब आ गया कि इस देश में डा. अम्बेडकर के बराबर और कोई हो नहीं सकता जिसने अंग्रेजों द्वारा भारत के और टुकड़े करने से साफ–साफ मना करते हुए कह दिया कि भारत उनका अपना देश है और वह कभी नहीं चाहेंगे कि धर्म के आधार पर उसके और टुकड़े हों। वह तो संपूर्ण भारत के मालिक हैं, इस देश के आदिवासी और मूल निवासी हैं। आप देश को आजाद करके यहां से चले जाइये, भारत को हम अब नये सिरे से सोने की चिड़िया बनायेंगे और विदेशियों द्वारा लूटे गौरव को पुनः भारत देश में लौटा लाएंगे।

भारत के संविधान निर्मात्री समिति के सभी सदस्यों के सामने समस्या यह आई कि उनमें से अधिकांश सदस्य राजनेता थे, या सामाजिक कार्यकर्ता। उनमें से कोई भी सदस्य ऐसा नहीं था जो संविधान के विषय में पूर्ण जानकारी रखता हो और संविधान निर्माण में सिद्धहस्त हो। भारत के संविधान निर्माण की समस्या गांधी जी के सामने आई। इसके लिए देश–विदेश के संविधान निर्माताओं के नाम पर विचार किया गया, पर उनमें से कोई भी ऐसा संविधान वेत्ता नहीं था जो भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक सांस्कृतिक धरोहर से अवगत हो और देश के सम्पूर्ण परिदृश्य से अवगत हो।

काफी मनन के बाद गांधी जी ने कहा कि हम देश–विदेश में संविधान निर्माता को खोज रहे हैं जबकि वह हमारे बीच में ही विराजमान है। गांधी जी की बातों से अचंभित हुए सदस्यों के सामने जैसे ही गांधी जी ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर का नाम संविधान निर्माता समिति के अध्यक्ष पद के लिए रखा, सभी ने जोरदार करतल ध्वनि से बाबा साहब डा. अम्बेडकर के नाम का जयकारा लगाते हुए उन्हें बधाई दी, और साथ ही महात्मा गांधी जी का भी धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया। महात्मा गांधी ने बाबा साहब के कन्धों को खुशी से थपथपाते हुए कहा कि मुझे विश्वास है कि डा. अम्बेडकर के नेतृत्व में भारत का संविधान विश्व में अकेला और अद्वितीय होगा, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा होगी और जिस पर चलकर भारत और सुदृढ़, सम्पन्न, वैभवशाली, सर्वप्रिय, सजग और सजीव होगा। विधायिका, कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका और जनसंचार पर खरा उतरते हुए अमरता के साथ आगे बढ़ता जाएगा जहां देश का हरेक नागरिक अपने को 'भारतीय' कहने में गर्व महसूस करेगा।

महात्मा गांधी जी ने भी भारत देश का संविधान निर्माण में पूर्ण भूमिका निभाई। देश के आदिवासी, मूल निवासी, अछूत व दलितों के अधिकारों का संविधान सम्मत बनाने में आने वाली अड़चनों को उन्होंने दृढ़ता के साथ हल किया। देश में स्वतंत्रता, समता व भाईचारे के अधिकार के साथ ही समाज के कमजोर–पिछड़े वर्ग को 'आरक्षण' की सुविधाएं देकर उन्हें संविधान सम्मत बनाने में बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर का अपूर्ण योगदान दिया। संविधान निर्माण करते हुए अगर कोई कठिनाई या रुकावट आने पर बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर बाबू जगजीवन राम के माध्यम से गांधी जी पर दबाव डालकर उसे हल करा लेते थे। जब तक भारत का संविधान अमर है, बाबा साहब का नाम भी भारत के संविधान निर्माता के रूप में अमर रहेगा। •

**हिमायती**

**हिन्दी पाक्षिक पत्र**

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

**सम्पादक : हिमायती**

**बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9**

**मो. 9810278936**

# पृष्ठ 1 का शेष...सुखी और सम्पन्न जीवन के लिए दलितो बिजनेस की ओर बढ़ो

तैयारियां करनी होंगी। इनके लिए ठोस और सतत नीतियां बनानी होगी, उन पर चलते रहना होगा। डा. अम्बेडकर के पास इन लक्ष्यों को साकार करने के लिए तमाम फॉर्मूले थे। अमेरिका सहित यूरोपीय देशों में अश्वेतों की स्थिति को गौर से देखते हुए डा. अम्बेडकर वाकिब थे कि भारत में सदियों से चली आ रही जाति व्यवस्था का जब तक समूल विनाश नहीं होगा, भारत किसी भी हाल में अमेरिका जैसा होना तो दूर उसके आसपास भी नहीं भटक सकता। औद्योगिकरण और शहरीकरण यानी सीधे सीधे देश की तरक्की। तो उन्होंने निष्कर्ष यह निकाला कि जाति व्यवस्था भारत के औद्योगिकरण व शहरीकरण की राह में सबसे बड़ी बाधा है।

**आखिर कब तक निहारते रहोगे दूसरों की दौलत?**

आज दलित पिछड़े आदिवासी व शोषित वर्ग के सामने रोजी रोटी का भारी संकट पैदा हो गया है। न खेतीबाड़ी, न रोजगार, न व्यापार न शिक्षा। सरकारी नौकरियों में आरक्षण रूपी हथियार को दलित विरोधियों ने एक साजिश के तहत पिछले दरवाजे से खत्म कर भोंथरा बना दिया है। देश में एक वर्ग हर क्षेत्र में दिनोंदिन आगे बढ़ रहा है वहीं दलित शोषित वर्ग के सामने भारी संकट पैदा हो गया है। ऐसे समय में छोटा बड़ा व्यापार किया जाना बहुत जरूरी है। सिर्फ आरक्षण के नाम पर अब नाम मात्र की नौकरियों के लिए रात दिन एक करना या आरक्षण को बचाने के लिए ही सारी ताकत झोंक देना ठीक नहीं है। हमें अब गांव, कस्बे शहर या विदेश में हर तरह के उद्धम, बिजनेस, उत्पादन, सप्लाई, ठेका, एनजीओ, मीडिया तथा विशाल प्राइवेट क्षेत्र में प्रवेश करना होगा। सरकारी नौकरियों में एक प्रतिशत व निजी क्षेत्र में निन्यानवे प्रतिशत रोजगार है। हर क्षेत्र में टेक्नोलोजी का तेजी से विकास हो रहा है। बिजनेस अब दुकान शोरूम से भी आगे ऑनलाइन हो चुका है। पूरी दुनिया अब एक छोटा सा गांव बन चुका है। समय तेजी से बदल रहा है। हमारे आस पास जातियों के बंधन ढीले पड़ रहे हैं। दलितों के लिए बिजनेस करने की बाधाएं काफी कम होती जा रही है। हमें बनिए को गाली नहीं देना है बल्कि उससे बिजनेस के गुर सीखने हैं। दलित वर्ग हमेशा से ही मेहनत, कर्मठ, वफादार, प्रतिभाशाली व हुनरमंद रहा है। देश दुनिया के इस दौर में हम समय के साथ नहीं दौड़े तो बहुत पीछे रह जाएंगे। हमें अब हर हालत में बिजनेस की ओर बढ़ना है। दलितो, चाहे भुंगडे बेचो लेकिन व्यापार करो। सेठ का बेटा सेठ कहलाता है लेकिन कलेक्टर का बेटा 'कलेक्टर' नहीं कहलाता है। व्यापार में कई पीढ़ियां तर जाती हैं। सरकारी नौकरी में नहीं। अब नौकर नहीं, मालिक बनना है। सेठ या अफसर के नहीं बल्कि खुद के सपने साकार करने का प्रण लेना है। ज्ञान व अंधविश्वास से परे बुद्ध, कबीर व डा. अंबेडकर की शिक्षाएं ही हमारी सामाजिक व आर्थिक मुक्ति का मार्ग है। हमें मेहनत, ईमानदारी व न्यायसंगत ढंग से धन कमा कर धनवान बनना है। धन को घर परिवार की खुशहाली के लिए समाज मैं पीछे रह गये भाईयों को आगे बढ़ाने में खर्च करना है तथा मानव कल्याण हेतु दान करना है। धन को धर्म की राह में भी खर्च करना है सिर्फ जोड़ते जाएंगे तो जीवन का आनंद चला जायेगा।

दलित बंधुओ, अब बिजनेस नहीं करने का बहाना नहीं चलेगा। हिन्दू धर्मशास्त्रों में हमारे खिलाफ क्या क्या लिखा है इसकी चिड़फाड़ में अब समय बर्बाद नहीं करना है। सवर्णा, ब्राह्मणों या बनियों को सिर्फ कोसने से कुछ नहीं मिलेगा। बी. पी. सब्सिडी, नरेगा की मजदूरी, राशन की सस्ती चीनी, आटे, चावल की चाह में कब तक हम गांवों में अपनी जिंदगियां बर्बाद करते रहेंगे। कई कौमें आजादी के बाद बिजनेस सहारे कितनी आगे बढ़ चुकी हैं वे 50 साल पहले इस देश में शरणार्थी थे लेकिन आज आर्थिक सत्ता के सिंहासन पर विराजमान हैं। अब पूंजीपतियों को गाली देने से हमारा उद्धार नहीं होगा व नेक ढंग से बिजनेस कर हमें भी पूंजीपति बनना है। धन की कमी से दलित, पिछड़े व आदिवासी वर्ग ने बहुत दुःख झेले है अब कब तक हमारे लोग फटे चिथड़ों, टूटी फूटी झोपड़ियों में रहेंगे और बिना दवा तड़पते रहेंगे। आखिर कब तक गरीब लोग अपनी गरीबी व दरिद्रता के छुटकारे के लिए मंदिरों में नाक रगड़ने जाते हुए भगदड़ों में बेमौत मारे जाएंगे और कब तक अच्छे कपड़े, भरपेट भोजन व रोजगार के लिए दूसरों के आगे झोली फैलाते रहेंगे। पैसा सारी बुराइयों की जड़ नहीं है बल्कि गलत ढंग से पैसा कमाना तथा गलत ढंग से खर्च करना ही सारी बुराइयों की जड़ है। आज दलित वंचित वर्ग के शिक्षित व साधन संपन्न वर्ग पर समाज के उत्थान की भारी जिम्मेवारी है उसे अपने सामाजिक दायित्व को याद करना है। अपने हुनर, ज्ञान, समय व धन को दान करना है। दलित, शोषित, वंचित वर्ग की खुशहाली के लिए आगे आना होगा। आखिर भावी पीढ़ी के लिए हम विरासत में क्या छोड़ कर जा रहे हैं। यदि तेजी से बदल रही इस दुनिया की रफ्तार में तेज नहीं दौड़े तो पतन तय है फिर आने वाली पीढ़ियां हमें कतई माफ नहीं करेंगी, लेकिन हुआ, ऐसा उद्योगपति की प्राप्ति की अंधी दौड़ में परिवार व समाज को ही भूल जाओ या अपनी जड़ों से कट जाओ। धन को सिर्फ जोड़ते मत जाना। खुद व परिवार के आनंद व समाज के कल्याण के लिए खर्च भी करना है।

**आर्थिक समृद्धि के बिना हमारा उद्धार नहीं**

धन, पूंजी या माया इस जगत के सर्वाधिक चर्चा, विवादित व महत्वपूर्ण विषय रहा है। दुनिया में सबसे जटिल विषय है पैसा, पैसा

अच्छे है या बुरे? कोई कहता है पैसा सभी बुराईयों की जड़ है तो कोई कहता है यह तो मेहनत का फल है और एक सुखी जीवन के लिए पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। अर्थात् किसी भी विषय पर इतनी विरोधाभासी धारणाएं नहीं है जितने पैसों पर। पैसों के जितने विरोधी हैं उतने समर्थक भी हैं। गुजरे दो हजार वर्ष में पिछले 50 वर्षों में ही मनुष्य की जीवनशैली, सोच विचार, धारणाओं में जितना तेजी से बदलाव आया है उतना बीते दो हजार वर्ष में नहीं आया है।

भारत में अरबपतियों की संख्या हर वर्ष बढ़ती जा रही एक और अधिकतर भारतीय पूंजीपति सामाजिक दायित्वों से आंख मूंद कर दिनोंदिन तिजोरियों की भराई तेज करते जा रहे हैं तो दूसरी ओर बिल गेट्स, अजीम प्रेमजी जैसे कई अमीर लोग गरीबों में शिक्षा के प्रसार के लिए बेशुमार दौलत दान दे रहा है, एक ओर पैसे के लिए गला काट होड़ चल रही है अमीर और अमीर होता जा रहा है, महलनुमा मकानों व मंदिरों में अकूत धन दौलत जमा की जा रही है तो दूसरी ओर श्रीलंकाई मूल के मलेशियाई अरबपति व्यापारी का प्रतिभाशाली युवा बेटा सारी माया को त्याग कर बौद्ध भिक्षु बनकर प्रेम, दया, करूणा भाव व प्रज्ञा के मार्ग पर चल पड़ता है। धन की लीला को आज तक कोई समझ नहीं पाया है, न इसकी परिभाषा गढ़ पाया है। लेकिन इतना तो तय है कि मनुष्य जीवन में धन का होना बहुत जरूरी है, हर कदम पर पैसे की जरूरत पड़ती है, इसके बिना कई मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं और सारे आदर्श, उद्देश्य व सपने चकनाचूर हो जाते हैं। भारतीय समाज का एक वर्ग व कई धर्मगुरू धन के मामले में पाखंडी व ढोंगी रूप में पेश आते हैं। वे दोहरा जीवन जीते हैं। कहते कुछ हैं और करते कुछ और हैं। आम व्यक्ति भी पैसा को ठोकर मारने की आदर्शवादी बातें करता है लेकिन व्यवहार जीवन में बारह महीने, बत्तीसों घड़ी और दशों दिशाओं में मन से, वचन से और कर्म से पैसा कमाने में जुटा रहता है। हमारे कथित धर्मगुरू सोने के सिंहासन पर बैठ कर सादगी के उपदेश देते हैं। अपने उपदेशों में वे माया को मोहिनी व ठगिनी बताकर भोली जनता को आदेश देते हैं कि वे अपनी सारी माया को गुरू के चरणों में डाल दें तो उनका कल्याण हो जायेगा।

मनुष्य जीवन में धन का महत्व, इसे कमाने के ढ़ंग तथा धन को खर्च व दान करने का सही, व्यावहारिक व मानव कल्याण का रास्ता बुद्ध, कबीर व बाबा साहेब अंबेडकर ने बताया है। तथागत बुद्ध ने गरीबी का कभी गुणगान नहीं किया बल्कि कहा कि गरीबी सबसे बड़ा रोग है यह सारे दुःखों की जननी है। उन्होंने भूख, गरीबी, दरिद्रता व अभावों के जीवन से मुक्ति का मार्ग बताया। उन्होंने मेहनत, ईमानदारी व न्यायसंगत ढंग से धन कमाने तथा इसे घर परिवार, व्यापार व मानव कल्याण में खर्च करने तथा दान करने को कहा, बुद्ध ने यह भी कहा कि मनुष्य धनी बने लेकिन धन के गुलाम नहीं बने। आरोग्य सबसे बड़ा सुख तथा लालच से परे संतोष सबसे बड़ा धन है। मानवता के मसीहा व विख्यात अर्थशास्त्री डा. अम्बेडकर ने तो मानो दलितों शोषितों की अंततः आर्थिक समृद्धि के लिए अपने जीवन को मशाल बना कर जिया। वंचित वर्ग की गरीबी व दरिद्रता से वे काफी चिंतित रहते थे तथा इससे हर हालत में मुक्ति दिलाकर दलितों को धनी बनाना चाहते थे। उन्होंने खुद गरीबी व अभावों की असहनीय पीड़ा को भोगा था इसलिए उनके जीवन का उद्देश्य ही इस वर्ग का सामाजिक व आर्थिक उत्थान करना था। वे चाहते थे कि दलित धनवान बनें, सिर्फ नौकरी मांगने वाले ही नहीं बल्कि नौकरी देने वाले भी बने। इसके लिए उन्होंने एक ओर सत्ता से संघर्ष किया तो दूसरी ओर कहा कि दलित वर्ग मंदिर, धर्मशास्त्र, पूजापाठ, कर्मकांड, तीर्थयात्रा, व्यसन आदि से दूर रहे तथा अपने आर्थिक सामाजिक उद्धार हेतु उच्च शिक्षा ग्रहण करे, धनी बनाने वाले रोजगार व व्यवसाय अपनाएं। उन्होंने चेताया था कि विषमता की खाई को जल्दी खत्म नहीं किया गया तो इससे पीड़ित लोग लोकतंत्र के महल को भस्म कर देंगे। आजादी के इतने लम्बे समय बाद भी आर्थिक गैर बराबरी दिनो दिन बढ़ती जा रही है।

**बीपीएल, नरेगा व राशन कार्ड में उलझा मेहनतकश दलित**

दलित समाज का जो वर्ग पढ़ लिखकर गांव से शहर आया, पॉश कॉलोनियों में भी बस गया लेकिन अगली पीढ़ी के लिए कोई पुख्ता व्यवस्था नहीं होने से दुखी है। अब न सरकारी नौकरियां, न गांव में खेती बाड़ी और न ही व्यापार। ऐसे में खुद शिक्षित दलितों के सामने भी विकट समस्या खड़ी हो रही है। जाति मालूम होने पर प्राइवेट सेक्टर में हमें प्रवेश नहीं मिलता है। प्राइवेटाइजेशन व ग्लोबलाइजेशन के कारण आरक्षण होने के बावजूद हम असहाय हैं, सिर्फ आरक्षण का झुनझुना लिए घूम रहे हैं। ब्राह्मण व वणिक वर्ग बाजार व प्राइवेट सेक्टर को मजबूत करता जा रहा है। साथ ही पिछले दरवाजे से साजिशपूर्ण सरकारी नौकरियां खत्म करता जा रहा है। वणिक वर्ग के बच्चे सी.एस., मैनेजमेंट, होटल व्यापार, ज्वैलरी, रियल स्टेट, बिजनेस व ब्रिटेन की बातें करते है। जबकि दलित वर्ग ग्रामसेवक, सिपाही, पटवारी, क्लर्क, ड्राइवर या नगर निगम में सफाई कर्मचारी बनने की कार्यवाही में उलझा हुआ है। गांव का गरीब दलित बीपीएल, नरेगा कार्ड या राशन कार्ड बनाने में ही जिंदगी पूरी कर रहा है। ब्रिटेन तो दूर हम अभी तक गांव की रूढ़ियों व धार्मिक अंधविश्वासों व कर्मकांडों से भी मुक्त नहीं हो पाये हैं। जमाना इंग्लिश का है हम आज भी संस्कृत के गुणगान कर रहे हैं। इंग्लिश, फ्रेंच, जर्मन भाषा तो दूर दलित समाज तो हिन्दी भी बराबर नहीं सीख पाया है। वाणिज्य वर्ग का बच्चा ग्रेजुएट डिग्रियां लेकर गांव में गुटखे चबाते घूमते हैं। वणिक वर्ग लाखों करोड़ों कमा रहा है और हम लोग अभी तक राशन

कार्ड की सस्ती चीनी, अनाज व केरोसिन लेने की लाइन में ही उलझे हुए हैं या सुअर भैंस के नाम पर सब्सिडी वाले लोन की आस लगाए रहते हैं। आखिर हममें व्यापारिक सोच कब पैदा होगी और बाबा साहब के सपने को कब साकार करेंगे?

**चपरासी नहीं, सेठ बनो और नौकर नहीं मालिक बनो**

हम पांच लाख रूपये रिश्वत देकर चपरासी की सरकारी नौकरी के लिए कोशिश करते हैं लेकिन इतनी पूंजी से कोई छोटा बिजनेस करने की नहीं सोचते हैं। मुश्किले तो आती है लेकिन व्यापार सफल होने पर आने वाली कई पीढ़ियों का कल्याण हो जाता है जबकि सरकारी नौकरी में तो कलेक्टर के बेटे को भी पूरी मेहनत करनी पड़ती है। कलेक्टर का बेटा कलेक्टर नहीं कहलाता जबकि सेठ, व्यापारी बेटा व्यापारी ही कहलाता है। बड़े व्यापार की छोड़ो फलों की दुकान वाला भी महीने की अच्छी रकम कमाता है। पानी के गोल गप्पे वाला या छोटा हेयर ड्रेसर भी खूब कमाता है फिर बड़े व्यापार की तो बात ही क्या। बस इसके लिए माहौल, सोच व फैसला लेने की हिम्मत की जरूरत है।

याद करो, मारवाड़ी बनिये लोग एक जमाने में लोटा, अंगोछा व मन में कुछ करने की हिम्मत लेकर मारवाड़ से बाहर व्यापार के लिए निकले थे। वे आज भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के व्यापार में छाये हुए हैं। वे राशन कार्ड की बजाय पेन कार्ड, बस की बजाय हवाई जहाज, हिन्दी, संस्कृत की बजाए जर्मन, फ्रेंच, इंग्लिश में ज्यादा विश्वास रखते हैं। बाबा साहब का सपना था कि दलित समाज पूंजीपति बने। सिर्फ नौकरी मांगने वाला नहीं बल्कि नौकरी देने वाला वर्ग भी दलितों में हो, आखिर बाबा साहब का सपना कब पूरा होगा?

**दलितों जागो ! समय करवट ले रहा है**

जिस हुनरमंद ओबीसी समुदाय का में जिक्र कर रहा हूं दरअसल ये वे ही लोग हैं जो दस पन्द्रह साल पहले राजस्थान के पाली मारवाड़ जिले में गाय भैंस या भेड़ बकरियां चराते थे। छोटी खेती करते थे। साक्षर या पांचवीं आठवीं से ज्यादा इन्होंने पढ़ाई नहीं की। गांवों में निरन्तर पड़ते अकाल तथा रोजी रोटी के संकट के मारे ये लोग गांव छोड़ दक्षिणी राज्यों की ओर चल पड़े। कल तक जो एक–एक पैसे के मोहताज थे वे अब करोड़ों अरबों खेल रहे हैं वो भी सिर्फ 10–15 साल में। आखिर इतने कम समय में इतना बदलाव कैसे आया? यह भी जानना जरूरी है। आज से कोई 60–70 साल पहले पाली व आसपास के जिलों के जैन समुदाय के लोग गांव छोड़कर दक्षिणी राज्यों की ओर व्यापार के लिए गए। वहां किराणा, कपड़े, सोने–चांदी आदि की दुकानों की, साथ में स्थानीय गरीबों को गहने गिरवी रखकर ब्याज पर पैसा देने का व्यापार किया। जैन समुदाय गत 50 साल में पूरे दक्षिणी राज्यों के मुख्य शहरों में फेल गया और अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। आज भी बैंग्लूरू, मुम्बई, चेन्नई, हैदराबाद, पुणे जैसे कई बड़े शहरों में इनका वर्चस्व है। अब ये जैन व्यापारी भारत के अलावा विदेशों में भी सफल व्यवसायी बने हैं। यदि भारत में ही है तो छोटे व्यापारी की बजाय बड़े, ज्वैलर्स बन गये। जैनियों द्वारा जो छोटे व्यापार छोड़े गये वे अब इन कम पढ़े–लिखे पिछड़ों ने अपना लिये जैसे किराणा, कपड़ा मिठाई, इलेक्ट्रीकल, मार्बल आदि। शुरू में इन्हें काफी मुश्किलें आई लेकिन आज इनका भी दक्षिणी राज्यों में उसी तरह का कब्जा है जैसे जैनियों का है। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि अब पाली जिले के हरेक गांव के औसत 100 करोड़पति और कुछ अरबपति है। पहले तो ये यदा कदा गांवों में आते थे लेकिन अब इनकी हवेलियां सूनी पड़ी हैं जिनकी सफाई गांव में पीछे छूटे दलित कर रहे हैं। जिन कम पढ़े लिखे लोगों की मैं बात कर कहा हूं वे राजस्थान के पाली मारवाड़ व आसपास के जिलों में पिछड़ी जातियों से हैं जिसमें सिरवी (कृषक, पशुपालक), घांची (तेली), खाती, कुम्हार, माली, रेबारी (भेड़ पालक) प्रमुख हैं। इनमें सबसे ज्यादा विकास सिरवी पशुपालकों ने किया है जिनकी अनपढ़ औरतें गांवों में पूरे हाथों में चूड़ा पहनती थीं वे अब आए दिन हवाईजहाज से यात्रा करती हैं। ताज्जुब की बात है कि इन लोगों के पास शुरू में न तो पैसा था न ही व्यापार करने की कला, न उच्च शिक्षा और न शहर के नाम पता। शुरू में ये लोग गांव छोड़कर जैनियों की दुकानों में नौकर रहे। धीरे–धीरे इन्होंने व्यापार की बारीकियां सीखीं। फिर किसी ने हिम्मत कर गांव के ढोर ढंगर, सूखी जमीन जायदाद, गहने गिरवी रखकर या बेचकर दक्षिण राज्यों के किसी शहर से दूर छोटी छोटी दुकानें खोलीं। ज्यों ज्यों इन्हें सफलता मिलती गई ये शहर की ओर बढ़ते गये और साथ ही जाति बिरादरी के लोगों को भी गांव से बुलाकर छोटे मोटे व्यापार में डालते रहे। खास बात यह है कि इन्होंने टांग खिंचाई की बजाय एक दूसरे की मदद की और धीरे–धीरे व्यापार बढ़ते रहे। यह सिलसिला आज भी जारी है। हालात यह है कि पाली व आसपास के जिलों के गांव के गांव खाली होते जा रहे हैं। इन पिछड़ी जातियों के इक्के दुक्के बुजुर्ग लोग पीछे बचे हैं। अब इन जिलों में सिर्फ दलित जातियों के लोग बचे हैं जो नरेगा की मजदूरी से मिर्च रोटी खाकर गुजारा करते हैं। चौपाल पर इन निठड़ी जातियों के विकास की कहानियां सुनते व सुनाते रहते हैं, शराब पीते हैं और गुटखे चबाते हुए मरी हुई जिंदगी गुजार रहे हैं।

**ऑफिसर का बेटा ऑफिसर नहीं परन्तु सेट का बेटा सेट कहलाता है**

दलितों ने व्यापार की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। व्यापार से कई भावी पीढ़ियों का कल्याण होता है। जबकि सरकारी नौकरी सें सिर्फ एक पीढ़ी का। व्यापारी का बेटा व्यापारी कहलाता है आई. ए. एस. का बेटा कलेक्टर नहीं कहलाता है। एक सिंधी परिवार का ध्यान हमेशा इस ओर रहता है कि शहर की नई कॉलोनी में कहां दुकान खोली जाये जबकि दलित हमेशा

आर. एन. आई. नं. 40611/62
RNI No. 40611/62

अखबारों में सरकारी वेकेन्सी ढूंढता रहता है जो आज के दौर में मिलना मुश्किल है। यही कारण है कि आजादी के बाद शरणार्थी बनकर आया सिंधी समाज आज पूरे भारत में आर्थिक रूप से सम्पन्न है। व्यापार की ताकत का एहसास इस बात से लगता है कि बड़े बड़े राजनेता व मंत्री भी व्यापारियों व उद्योगपतियों के आगे पीछे घूमते नजर आते हैं लेकिन इस ताकत का दलितों को कभी एहसास नहीं हुआ और आज संकट में है। जब पढ़े लिखे उच्च अधिकारियों के बेटे बेटियों के लिए भी नौकरी नहीं है तो फिर गांव के रामू मोची या मोहन मेहतर की संतान को नौकरी मिलना कितना मुश्किल होगा। अब दलितों के पास न खेती है और न व्यापार, न नौकरी है और न पैसा।

माना कि दलितों के साथ समाज में भेदभाव होता है विकास में थोड़ी रूकावट आती है लेकिन अब पहले जैसे हालात नहीं हैं। यदि आपमें लगन है तो व्यापार में बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। गांव में छूआछूत है तो शहरों में आओ। यहां चाय की दुकान, रेस्टोरेंट व होटल खोलते समय कौन जाति पूछता है। शहर में किराणा, कपड़ा या ज्वैलरी की शॉप में कोई भी जाति पूछकर नहीं आता है। अब बहानेबाजी नहीं चलेगी। एक दलित युवक जमीन बेचकर पांच लाख की रिश्वत देकर चपरासी लगने को लालियत रहता है लेकिन पांच लाख में छोटा व्यापार शुरू करने की हिम्मत नहीं करता। मारवाड़ी पिछड़ी जाति के लोगों को दक्षिणी राज्यों में व्यापार बढ़ाते समय किसी ने नहीं पूछा कि उसकी जाति क्या है। जब अनपढ़ पिछड़े सफल हो सकते हैं तो पढ़े लिखे दलित क्यों नहीं। एक कम पढ़ा नाई शहर में हेयर ड्रेसर की दुकान में रोजाना एक हजार रूपए से कम नहीं कमाता है सिर्फ एक कैंची चलती है। एक दर्जी शहर में टेलर या ड्रेस डिजायनर बने महीने की भरपूर कमाई करता है लेकिन दलितों को इससे भी शर्म आती है।

दलितों को चाहिए कि अब पुराने धार्मिक ग्रंथों की चीड़ फाड़ करने में ज्यादा समय बर्बाद नहीं करें। रामायण, महाभारत, मनुस्मृति में हमारे खिलाफ क्या लिखा इस पचड़े में दिमाग खर्च नहीं करें। अब न हमारे कान में कोई सीसा भरता ओर न ही जबरदस्ती मनुस्मृति पढ़ाता है। आए दिन तीर्थयात्रा करने के लिए या मंदिरों में नाक रगड़ने के लिए कोई आपके पीले चावल नहीं भेजता है। वह तो आपके सपने में भी नहीं याद करता है अब दलित खुद ही अंधविश्वास के मारे तथा बिना मेहनत किए धन प्राप्त करने के लिए मंदिर में नाक रगड़ने जाता है तो इसमें पंड़ितों की क्या गलती। आज समय की जरूरत यह समझने की है कि हमारी मुक्ति का मार्ग मंदिर नहीं है बल्कि उच्च शिक्षा व रोजगार के अच्छे साधन प्राप्त करना है आज जिसके पास अर्थ है वही समर्थ है। आज दलित समाज वणिक व्यापार वर्ग के फैलाए बाजार का बहुत बड़ा ग्राहक बना हुआ है जबकि सम्पूर्ण वणिक वर्ग दलितों के आरक्षण की खिलाफत करता है। मजेदार बात यह है कि आरक्षण का हौवा ज्यादा है इसके विरोध में तो वणिक का बेटा आत्महत्या कर सकता है लेकिन एक दलित द्वारा कपड़े की दुकान खेलने पर शुरू में हल्की ईर्ष्या जरूर होगी लेकिन विरोध नहीं करेगा बल्कि बाद में तो दलित भी वणिक के साथ व्यापारी वर्ग में शामिल हो जाएगा।

आज शहर के दलित नौकरियों की बदौलत क्रय शक्ति बढ़ी है लेकिन इसका सारा लाभ वणिक वर्ग को जा रहा है आए दिन होने वाले कामकाज, शादी ब्याह, त्यौहार, शिक्षा आदि किसी भी क्षेत्र में वह वणिक के चंगुल से बच नहीं पा रहा है। यदि दलित चाहे भी तो उसे दलित की दुकान नजर आती जहां से वह खरीददारी कर सके। यानी दलितों की कमाई वणिकों के घरों में तो जाती है लेकिन वणिकों के घर से एक पैसा भी दलितों की ओर नहीं आता है ऐसा व्यापार में वणिकों का एक छत्र साम्राज्य होने के कारण है। आज शहर कस्बे बाजारों से भरे पड़े हैं। शहर के किसी भी कोने में चले जाइए, हर जगह आधुनिक मार्केट, शूज, गारमेंटस, शॉप, ब्यूटीपार्लर, जिम, रेस्टोरेंट और पानी पतासे की दुकानों से लेकर पान व डेयरी की थड़ी नजर आती है। लेकिन इस सम्पूर्ण बाजार तंत्र में दलित कहीं भी नजर नहीं आता है। वह सिर्फ ग्राहक है पैसा खर्च करने वाला ग्राहक। नौकरीशुदा दलित की कितनी ही तनख्वाह क्यों न बढ़े वह किसी भी रूप में वणिक की जेब में ही जाएगी। ऐसे में दलितों को चाहिए कि वह छोटे बड़े व्यापार की ओर ध्यान दें। निजीकरण के दौर में यदि दलित की संतान को जिंदा रखना ही तो व्यापार की ओर ध्यान देना होगा। पैसा गहनों, मकान को भव्य बनाने, शराब, कुरीतियों व शादी ब्याह में ज्यादा खर्च करने की बजाय बचत करें तथा अपने आस पास के परिवारजनों के कल्याण हेतु छोटा मोटा व्यापार शुरू करें देखना सफलता जरूर मिलेगी।

यह लेख देश के दबे, कुचले, शोषित वर्ग में बिजनेस के जागरूक कर माहौल बनाने तथा उत्साह पैदा करने का एक छोटा सा प्रयास है। उम्मीद है यह कोशिश कुछ बदलाव लाएगा। इस क्षेत्र में बहुत अध्ययन, शोध व लेखन की जरूरत है। आरक्षण के बिन जातपांत व भेदभाव की सारी बाधाओं को लांघकर अपनी योग्यता, साहस व श्रम के सहारे आज कई दलित प्रतिभाएं बिजनेस की ऊंचाईयों को छू रही हैं। अब दलित वर्ग को बड़े पैमाने पर बिजनेस में कूदने में देरी नहीं करनी है। •

# दलितों को मंदिर में प्रवेश नहीं, शिक्षा चाहिए

**डा. एम. एल. परिहार**

इस बात पर क्या देश को खुश होना चाहिए कि देश के किसी भाग में एक मंदिर में दलितों को 900 साल बाद घुसने का मौका मिला ? या फिर दलित को क्या इस बात का जश्न मनाना चाहिए कि एक अन्य प्रमुख मंदिर में 100 साल में पहली बार दलितों का प्रवेश अब भी वर्जित है। तो क्या 21वीं सदी में मन्दिर प्रवेश दलित मुक्ति का एजेण्डा साबित हो सकता है?

ये सवाल केवल इसलिए महत्त्वपूर्ण नहीं है कि यहाँ हम देश के लगभग 16 प्रतिशत लोगों यानि हर छः में एक आदमी के बारे में बात कर रहे हैं। इस सवाल का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि यह बात नए समाज के निर्माण से सीधे जुड़ी हुई है। दलितों के मन्दिर प्रवेश को लेकर हिन्दू समाज के हिस्से में हमेशा विरोध रहा है। जिन मंदिरों में दलितों को जाने की इजाजत है, वहां भी पूजा–पाठ और मन्दिर के संचालन में दलितों की हिस्सेदारी नहीं है। देश के किसी भी प्रमुख मन्दिर का संचालन नहीं है। देश के किसी भी प्रमुख मन्दिर में दलित पुजारी नहीं है और न ही दलित किसी महत्त्वपूर्ण मन्दिर का संचालन करते हैं। मन्दिरों और जाति समूहों का नियन्त्रण होता है। क्या दलित इस स्थिति में पहुंच पा रहे हैं कि मन्दिरों की अर्थव्यवस्था में उनकी हिस्सेदारी हो ? अभी यह दूर की कौड़ी है।

ऐसे में 21वीं सदी में क्या दलितों के मन्दिर में प्रवेश पाने के लिए जूझना चाहिए? मन्दिरों में दलितों के प्रवेश के लिए संघर्ष की एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने नासिक के कालाराम मन्दिर में दलितों के प्रवेश के लिए पांच साल लम्बा आन्दोलन चलाया था। हालांकि वह आन्दोलन कामयाब रहा, लेकिन मन्दिर ने दलित मानस में काफी कड़वाहट पैदा की। नतीजन 1956 में बाबा साहेब ने अपने अनुयायियों के परिर्वतन का यह फैसला अपने जीवन के आखिरी दिनों में किया, लेकिन वह लम्बे समय से इस विचार को आगे बढ़ा रहे थे कि दलित ऐतिहासिक रूप से हिन्दू समाज का हिस्सा नहीं है। इसी आधार पर वह दलितों के लिए अलग चुनाव क्षेत्र की मांग कर रहे थे, जहां दलित उम्मीदवारों के चयन के लिए सिर्फ दलित ही मतदान करें। यह बात अलग है कि गांधी जी के अनशन के कारण उन्हें वह मांग छोड़नी पड़ी। उसके बाद 60 साल बीत गए हैं। इस बीच दलित आन्दोलन ने लम्बा सफर तय किया है। आरक्षण की संवैधानिक प्रावधानों की वजह से दलितों के कई क्षेत्रों में दलित अब प्रभावशाली नजर आते हैं। ऐसे में क्या उन्हें यह चिन्ता करनी चाहिए कि कोई मन्दिर उनके साथ अछूत की तरह व्यवहार करता है?

हिन्दू समाज का हिस्सा बनकर इस समय दलितों का कोई हित नहीं साधता बल्कि यह हिन्दू समाज के हित में है कि दलित उनके वृहत्तर समाज का हिस्सा बने रहें। इसलिए हम पाते हैं कि दलितों के साथ सहभोजन से लेकर उनके मन्दिर में प्रवेश जैसे आन्दोलनों के केन्द्र में ज्यादातर सनातनधर्मी संगठन ही हैं। इन संगठनों का नेतृत्व अनिवार्य रूप से सवर्ण जाति समूहों के हाथ में है। दलितों के स्वाभिमान की लड़ाई में मन्दिर व्यवस्था को मजबूत किया जा रहा है, जिसके संचालन में दलित दूर–दूर तक कहीं नहीं हैं। गांधी जी जब दलितोद्धार कार्याक्रम चला रहे थे तब तिरूपति जैसे देश के सबसे समृद्ध मन्दिर के पुजारी दलित गोविन्दम कार्यक्रम के तहत मूर्तियों को लेकर दलित बस्तियों में जाते हैं तो इनके पीछे का विचार यही है कि दलितों का हिन्दू धर्म के दायरे में समेटकर रखा जाए, लेकिन इसमें दलितों का क्या हित है? यह सोचना जरूरी है। अम्बेडकर ने बेशक इस विचार को खारिज कर दिया, लेकिन दलितों का बड़ा तबका अब भी मन्दिरों में ही मुक्ति का मार्ग तलाश रहा है। इसलिए दलितों के मंदिर प्रवेश को लेकर आंदोलनों की गुंजाइश बनी हुई है।

अलबत्ता इस दौर में मन्दिर प्रवेश दलितों के लिए मुक्ति का मार्ग नहीं हो सकता। मन्दिरों में प्रवेश की सुविधा उन्हें अधिकार के तौर पर नहीं मिल सकती बल्कि हिन्दू समाज के लिए यह एक रणनीतिक फैसला है। फिर अब दलितों की मुक्ति के लिए नए मन्दिर अस्तित्व में आ चुके है। ये मन्दिर शिक्षा और विज्ञान के है। शहर भी दलितों के लिए मुक्ति का मार्ग साबित हो रहे हैं। अब शहरों के मन्दिरों में घुसने से पहले किसी से जातिं नही पूछी जाती। शहरों में जातिगत पहचान से जुडें कई दूसरे भेदभाव समाप्त हो चुके हैं। बसों से लेकर ट्राम, मैट्रो और रेल में साथ बैठना सबकी मजबूरी है। रेस्टोरेंट में खाना खाने का अधिकार आपकी जेब में मौजूद पैसों और क्रेडिट / डेबिट कार्ड से तय होता है। शहरी लोक जीवन में जाति खत्म तो नहीं हुई है लेकिन उसका महत्त्व निर्णायक रूप से कम हुआ है। ऐसे में गांवों के दलितों के लिए बेहतर है कि वे मन्दिर में घुसने के अधिकार में अपनी ऊर्जा खर्च करने की जगह शहरों की ओर भागे और न लेज इकोन मी में जगह बनानी है तो शिक्षा को लेकर अपने और परिवार में पागलपन पैदा करें। दलितों अब मन्दिरों में नहीं स्कूलों में मुक्ति मिलेगी। नई टेक्नोलोजी के दौर में ऐसी ही शिक्षा प्राप्त करें व व्यवसायी बनें। •

*स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936* Email-sumanakshar@ymail.com

*नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।*

*सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009*